International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science
ISSN: 2394-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-13, Issue-6 June – 2026 www.ijarets.org

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 पूनम पाठक

सारांश, प्राचीन काल में भी शिक्षा को बहुत महत्व दिया जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान शिक्षा का कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता है, लेकिन वहां की बसावट और जल निकासी प्रणाली (ड्रेनेज सिस्टम) को देखकर यह समझा जा सकता है कि लोग बहुत बुद्धिमान थे। वैदिक सभ्यता के दौरान शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। सभी वेदों को पहले एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक मौखिक रूप से पहुँचाया जाता था। ऋग्वेद को 1300–1500 ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया था। वैदिक काल में शिक्षा का माध्यम संस्कृत था, जबकि बौद्ध शिक्षा में पाली भाषा शिक्षा का माध्यम बनी। प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली के औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों तरीके मौजूद थे। स्थानीय शिक्षा घरों, मंदिरों, पाठशालाओं, टोल, चतुष्पदियों और गुरुकुलों में दी जाती थी। घरों, गांवों और मंदिरों में ऐसे लोग होते थे जो छोटे बच्चों को जीवन के पवित्र तौर–तरीके सीखने में मार्गदर्शन करते थे। मंदिर भी सीखने के केंद्र थे और हमारी प्राचीन प्रणाली के ज्ञान को बढ़ावा देने में रुचि रखते थे। छात्र उच्च ज्ञान के लिए विहारों और विश्वविद्यालयों में जाते थे। शिक्षण मुख्य रूप से मौखिक होता था और छात्र कक्षा में जो पढ़ाया जाता था, उसे याद करते थे और उस पर चिंतन करते थे।

मुख्य शब्द, स्थानीय शिक्षा घरों, मंदिरों, पाठशालाओं, टोल, चतुष्पदियाँ, मैत्रेयी, विश्वंभरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि

परिचय, गुरुकुल, जिन्हें आश्रम भी कहा जाता था, सीखने के आवासीय स्थान थे। इनमें से कई ऋषियों के नाम पर रखे गए थे। जंगलों में, शांत और सुकून भरे माहौल में स्थित गुरुकुलों में सैकड़ों छात्र एक साथ सीखते थे। प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को भी शिक्षा का अधिकार था। प्रमुख महिला वैदिक विद्वानों में मैत्रेयी, विश्वंभरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि के नाम मिलते हैं। उस समय, गुरु और उनके शिष्य एक साथ रहते थे और दैनिक जीवन में एक–दूसरे की मदद करते थे। इसका मुख्य मकसद पूरी तरह से सीखना, अनुशासित जीवन जीना और अपनी अंदरूनी क्षमता को पहचानना था। छात्र अपने लक्ष्य को पाने तक सालों–साल अपने घरों से दूर रहते थे। गुरुकुल वह जगह भी थी जहाँ समय के साथ गुरु और शिष्य का रिश्ता मजबूत होता था। इतिहास, बहस की कला, कानून, चिकित्सा आदि जैसे अलग–अलग विषयों की पढ़ाई करते समय, न केवल विषय के बाहरी पहलुओं पर बल्कि व्यक्तित्व के अंदरूनी पहलुओं को बेहतर बनाने पर भी जोर दिया जाता था।

प्राचीन काल में पढ़ाने के काम को पवित्र माना जाता था और शिक्षकों को बहुत सम्मान दिया जाता था। शिक्षा सिर्फ ज्ञान पाने के लिए ही नहीं, बल्कि चरित्र के विकास, आत्म–नियंत्रण और आत्मविश्वास पाने और सामाजिक मुद्दों को समझने के लिए भी दी जाती थी। इसलिए शिक्षा पूरी तरह से मुफ्त थी और शिक्षा प्रणाली में प्रशासन का कोई दखल नहीं था।

क्रम संख्या	शब्द	शब्द का अर्थ
1	पाठशालाएँ	खुली जगह पर चलने वाली संस्था, जिसमें कोई पक्की इमारत नहीं होती थी
2	टोल	खुला आँगन
3	चतुष्पादी	चारों ओर खंभों वाली विश्राम की जगह
4	गुरुकुल	प्राचीन विद्यालय
5	पवित्र	धार्मिक
6	विहार	बौद्ध मठ
7	बहस	अलग–अलग तर्क और विचार रखना

प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रमुख स्रोत

प्राचीन शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से वेदों, उपनिषदों और धर्मसूत्रों पर आधारित थी। कुछ महत्वपूर्ण स्रोतों में इतिहास, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, शिल्पशास्त्र और अर्थशास्त्र शामिल थे। इसमें तीरंदाजी और शारीरिक व्यायाम जैसी शारीरिक शिक्षा भी शामिल थी। प्राचीन भारत में शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल प्रणाली ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राचीन भारत में शिक्षा की प्रणाली और स्रोत बहुत दिलचस्प थे। शिक्षा में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सर्वांगीण विकास को समान महत्व दिया जाता था। सीखने के सभी पहलुओं में निपुणता हासिल करने के लिए गुरु और शिष्य लगातार एक टीम के रूप में मिलकर काम करते थे। बाद में, छात्रों की सीख और समझ का आकलन करने के लिए वाद–विवाद या शास्त्रार्थ आयोजित किए जाते थे।

वैदिक काल के दौरान, बच्चे की शिक्षा 4 साल की उम्र में शुरू होती थी। शिक्षा शुरू करने से पहले, बच्चे के माता–पिता यज्ञ करते थे और बच्चे की शिक्षा की सफलता के लिए देवी सरस्वती की पूजा करते थे। जब बालक

एक निश्चित उम्र (आमतौर पर 8 साल) का हो जाता था, तो उसका उपनयन संस्कार (जनेऊ धारण करने की रस्म) किया जाता था। बाद में उसे उच्च शिक्षा के लिए गुरु के घर भेजा जाता था। गुरु के घर जाकर रहने की इस प्रणाली को गुरुकुल कहा जाता था। प्राचीन समय में, शिक्षा देने के लिए गुरु–शिष्य के रिश्ते को बहुत पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाता था।

गुरुकुल में सभी छात्रों को उनके सामाजिक दर्जे की परवाह किए बिना समान माना जाता था। इस प्रणाली में, सभी छात्र गुरु के घर पर एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे और बदले में गुरु के दैनिक घरेलू कार्यों में उनकी मदद करते थे। शिक्षा पूरी होने पर, छात्र गुरुकुल छोड़ने से पहले गुरु को गुरु–दक्षिणा देते थे। गुरुकुल प्रणाली में छात्र को न केवल शिक्षा दी जाती थी, बल्कि उसे जीवन के लिए आवश्यक अन्य सामाजिक गतिविधियाँ भी सिखाई जाती थीं। जब तक छात्र गुरुकुल से बाहर निकलता था, तब तक वह शिक्षा के साथ–साथ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति बन चुका होता था। हिंदू धर्म में गुरु और शिष्य का रिश्ता बहुत पवित्र माना जाता था और यह रिश्ता बौद्ध, जैन और सिख धर्मों में भी देखने को मिलता है। गुरुकुल एक संस्कृत शब्द है, जिसमें गुरु का अर्थ शिक्षक और कुल का अर्थ घर होता है। उपनिषदों में गुरुकुल प्रणाली का जिक्र मिलता है। चूँकि गुरु छात्रों से कोई फीस नहीं लेते थे, इसलिए गुरुकुल का खर्च आमतौर पर लोगों से मिलने वाले दान या सार्वजनिक धन से चलता था। पुराने समय में कोई परीक्षा नहीं होती थी। शिक्षा एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया थी। सीखने के हर चरण के बाद, गुरु कई अन्य गुरुओं और आम लोगों के सामने समावर्तन समारोह आयोजित करते थे।

वैदिक काल में पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से वेद शामिल थे। छात्र को घर के सभी काम–काज और जीवन से जुड़ी कुछ जरूरी ट्रेनिंग भी दी जाती थी। प्राचीन भारत में शिक्षा देने के मुख्य रूप से तीन चरण थे श्रवण, मनन और निदिध्यासन। श्रवण का अर्थ है शिक्षक की बातों को ध्यान से सुनना या मनन का अर्थ है छात्र का पढ़ाए गए विषयों पर विचार करना और निदिध्यासन का अर्थ है सीखी गई बातों पर गहराई से चिंतन करना।

बौद्ध काल में शिक्षा बौद्ध धर्म और जैन धर्म के फैलने से पुराने भारत में शिक्षा एक अलग लेवल पर पहुँच गई। बौद्ध काल में मठ शिक्षा का सेंटर बन गए। इस समय में शिक्षा सभी क्लास और जातियों के लिए आसान हो गई। बौद्ध काल में बनी कुछ मशहूर यूनिवर्सिटी तक्षशिला और नालंदा थीं। पुराने भारत में शिक्षा सिर्फ वेदों की पढ़ाई पर ही नहीं, बल्कि बच्चे के ओवरऑल डेवलपमेंट पर भी ज्यादा फोकस करती थी। इससे भारतीय सभ्यता के विकास में मदद मिली। बौद्ध काल में शिक्षा का मुख्य मकसद चरित्र की शुद्धता था। साधु–संतों के लिए कई मठ और विहार बनाए गए ताकि वे बहस, ध्यान और चर्चा के जरिए अलग–अलग लोगों तक शिक्षा पहुँचा सकें। इन विहारों के आस–पास हायर लर्निंग के लिए दूसरे एजुकेशनल सेंटर बने। मोक्ष पाने के लिए सुत्त पिटक, धम्म जैसी धार्मिक किताबों की पढ़ाई जरूरी थी। पुरानी यूनिवर्सिटी यहाँ यूनिवर्सिटी शब्द का सीधा मतलब है एक ऐसा सेंटर जहाँ पढ़ने–लिखने की चाह रखने वाले स्टूडेंट्स को हायर एजुकेशन दी जाती थी। यह उन सभी अलग–अलग खूबियों

को नहीं दिखाता जो आज ईस्ट और वेस्ट की यूनिवर्सिटीज में हैं। इन यूनिवर्सिटीज में कई जरूरी खूबियाँ थीं, जो हमारे मॉडर्न इंस्टीट्यूशन्स में नहीं मिलतीं। विहारों के आस–पास हायर एजुकेशन के लिए कई एजुकेशनल सेंटर बनाए गए थे, जहाँ चीन, कोरिया, बर्मा और नेपाल से स्टूडेंट आते थे। जातक कथाओं से पता चलता है कि राजाओं और समाज ने एजुकेशन को बढ़ावा देने में गहरी दिलचस्पी ली। इसी वजह से तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी और विक्रमशिला जैसी कई यूनिवर्सिटीज बनीं। इन यूनिवर्सिटीज के बारे में कुछ डिटेल्स यहाँ दी गई हैं।

तक्षशिला – तक्षशिला यूनिवर्सिटी, तक्षशिला शहर की एक मशहूर पुरानी यूनिवर्सिटी है। तक्षशिला एक पुराना शहर है जो अभी पाकिस्तान के नॉर्थ–वेस्ट हिस्से में है। यह एक जरूरी UNSECO वर्ल्ड हेरिटेज आर्कियोलॉजिकल साइट है। यह बौद्ध धर्म की धार्मिक शिक्षाएँ सीखने के लिए एक बहुत मशहूर जगह थी। पाठ्यक्रम में विज्ञान, कला, कानून, शास्त्र, चिकित्सा, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों विषय शामिल थे माना जाता है कि यहाँ चीन, बेबीलोन, सीरिया और ग्रीस जैसे दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से दस हजार से ज्यादा छात्र और भारतीय छात्र पढ़ने आते थे। मौर्य काल में भी तक्षशिला शिक्षा का एक अहम केंद्र बना रहा।

तक्षशिला विश्वविद्यालय का फोटो

नालंदा – नालंदा यूनिवर्सिटी भारत के बिहार राज्य के राजगीर में स्थित एक बहुत पुरानी यूनिवर्सिटी है। प्राचीन नालंदा का विकास गुप्त काल में 5वीं और 6वीं सदी में हुआ। आज यह भारत में UNESCO की वर्ल्ड हेरिटेज साइट है। इस केंद्र में आठ अलग–अलग परिसर, 10 मंदिर, ध्यान कक्ष, क्लास–रूम, झीलें और पार्क थे। यहाँ नौ मंजिला लाइब्रेरी थी जहाँ भिक्षु बहुत ध्यान से किताबों और दस्तावेजों की नकल करते थे ताकि अलग–अलग विद्वानों के पास

अपना संग्रह हो सके। यहाँ छात्रों के लिए डॉरमेट्री (रहने की जगह) थी, जो शायद किसी शिक्षण संस्थान में पहली बार हुआ था, यहाँ यूनिवर्सिटी के सबसे अच्छे समय में 10,000 छात्र रहते थे और 2,000 प्रोफेसरों के रहने की व्यवस्था थी। अपने सबसे अच्छे समय में यूनिवर्सिटी में चीन, तिब्बत, कोरिया और भारत के छात्र और विद्वान पढ़ते थे। नालंदा को अलग–अलग राजवंशों ने तीन बार नष्ट किया। दिल्ली सल्तनत के मामलुक राजवंश ने नालंदा को नष्ट कर दिया था। नालंदा के छात्र बौद्ध धर्म के महायान और हीनयान ग्रंथों का अध्ययन करते थे। यूनिवर्सिटी में पढ़ाए जाने वाले कुछ अन्य विषय थे – वेद, तर्कशास्त्र, संस्कृत व्याकरण, चिकित्सा और सांख्य। चीनी विद्वान जैसे जुआन जैंग और आई–किंग ने 7वीं सदी में नालंदा यूनिवर्सिटी का दौरा किया। बाद में जुआन जैंग खुद योगशास्त्र पढ़ने के लिए नालंदा के छात्र बने।

नालंदा विश्वविद्यालय का फोटो

वल्लभी – वल्लभी यूनिवर्सिटी बौद्ध शिक्षा का एक अहम केंद्र थी और 600 BC से 1400 BC के बीच हीनयान बौद्ध धर्म को बढ़ावा देती थी। वल्लभी 480–775 BC के दौरान मैत्रक साम्राज्य की राजधानी थी। यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए एक अहम बंदरगाह था। जो सौराष्ट्र में स्थित था आज इसे वल्लभीपुर कहा जाता है और यह पश्चिमी भारत में गुजरात के भावनगर जिले में स्थित है, जो पुराने वाला राज्य के समान है। कुछ समय तक, शिक्षा के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय को बिहार के नालंदा का प्रतिद्वंद्वी माना जाता था। हालांकि वल्लभी को निकाय बौद्ध धर्म (खासकर

पुद्गलवाद सम्मितीय संप्रदाय) को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है, लेकिन यह न तो केवल इसी तक सीमित था और न ही संकीर्ण सोच वाला था। यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के साथ–साथ ब्राह्मणवादी विषयों की भी पढ़ाई होती थी। ऐसे प्रमाण मिले हैं कि ब्राह्मण छात्र भी इस विश्वविद्यालय में पढ़ने आते थे। धार्मिक विषयों के अलावा, यहाँ पढ़ाए जाने वाले कोर्स में ये शामिल थे।

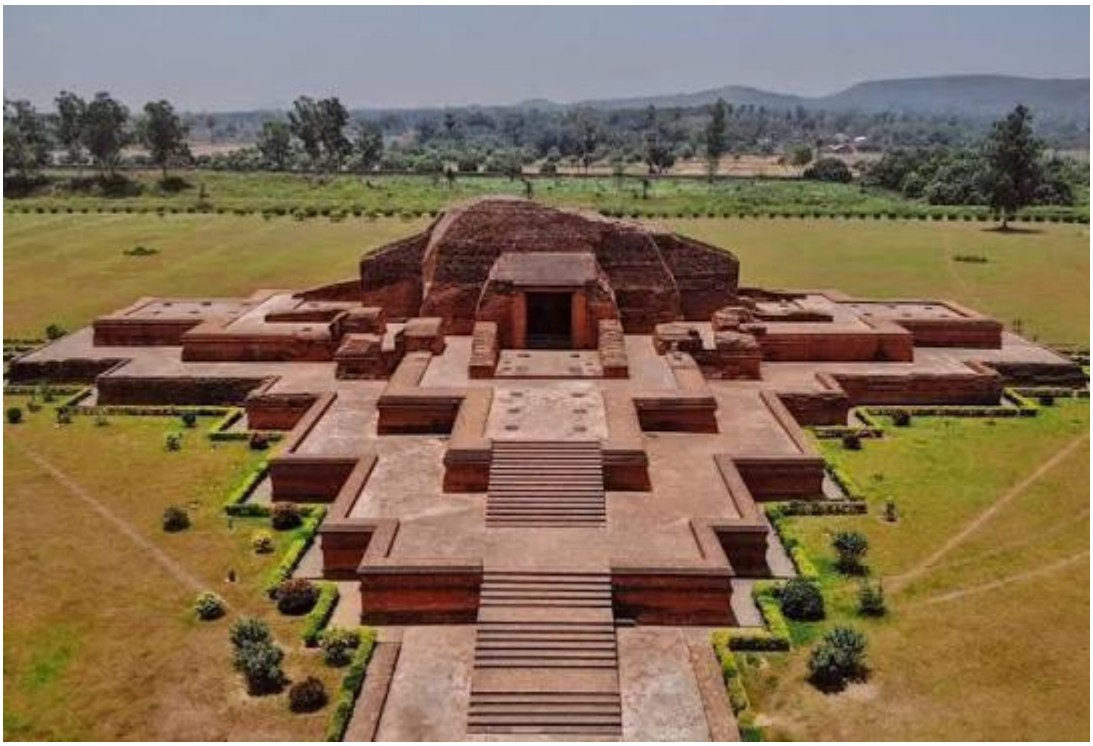

वल्लभी विश्वविद्यालय का फोटो

विक्रमशिला –पाल साम्राज्य के समय नालंदा के साथ–साथ यह भी सबसे महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में से एक था। यह भारत के बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित है। इसकी स्थापना पाल शासक धर्मपाल ने 8वीं सदी के आखिर और 9वीं सदी की शुरुआत में की थी। यह सबसे बड़े बौद्ध विश्वविद्यालयों में से एक था, जिसमें 100 से ज्यादा शिक्षक और लगभग एक हजार छात्र थे। यहाँ पढ़ाए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण विषय थे – दर्शनशास्त्र, व्याकरण, तत्वमीमांसा और भारतीय तर्कशास्त्र। इस प्राचीन विश्वविद्यालय को लगभग 1193 में मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी की सेनाओं ने नष्ट कर दिया था। इस प्राचीन विश्वविद्यालय को फिर से बनाने का काम अभी भी चल रहा है। बौद्ध भिक्षुओं के रहने की जगह एक विशाल चौकोर इमारत थी, जिसमें लगभग 200 कमरे थे और वे सभी एक आम बरामदे में खुलते थे।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय का फोटो

प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा देना था। शिक्षा मुख्य रूप से संस्कृति, चरित्र और व्यक्तित्व को बेहतर बनाने और नेक आदर्शों को विकसित करने पर केंद्रित थी। इसका उद्देश्य छात्रों के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक व्यक्तित्व का विकास करना था, ताकि वे भविष्य के लिए तैयार हो सकें और किसी भी स्थिति में जीवित रह सकें।

प्राचीन काल में, राज्य सरकार और लोग पाठ्यक्रम बनाने, फीस तय करने या पढ़ाने के घंटों को नियंत्रित करने में दखल नहीं देते थे। शिक्षक और छात्र के बीच गहरा संबंध होता था। हर छात्र को एक शिक्षक सौंपा जाता था और छात्र–शिक्षक संबंध पर ज्यादा जोर दिया जाता था हर छात्र सीखने और निर्देश पाने के लिए शिक्षकों से व्यक्तिगत रूप से मिलता था। प्राचीन समय में, शाही परिवार और राज्यों के राजा शिक्षा प्रणाली और उसकी गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए अपनी संपत्ति दान करते थे। पाठ्यक्रम उस समय की जरूरतों के हिसाब से बनाया जाता था। उस समय छात्र अपनी शिक्षा पूरी होने तक अपना घर छोड़कर अपने गुरुओं के साथ रहते थे। शुरुआती वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा पर भी ज्यादा जोर दिया जाता था। शिक्षा छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास पर केंद्रित थी। कोर्स की अवधि लगभग 10–12 साल थी। चूंकि किताबें नहीं थीं, इसलिए छात्र सब कुछ याद कर लेते थे सीखने की प्रक्रिया में याददाश्त की अहम भूमिका थी। छात्रों को पढ़ाई के लिए सुखद और शांत माहौल देने के लिए शिक्षा शहरों और लोगों की भीड़ से दूर जंगलों में दी जाती थी।

प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम की अहम भूमिका होती है। यह गतिशील था, स्थिर नहीं यह अलग–अलग चरणों से मिलकर बना था। एक अच्छा पाठ्यक्रम बनाने का मुख्य मकसद छात्रों का शारीरिक और मानसिक विकास करना था। पाठ्यक्रम में चार वेद, छह वेदांग, उपनिषद, दर्शन, पुराण और तर्कशास्त्र शामिल थे। छह वेदांग थे – शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्पय जबकि दर्शन थे – न्याय, वैशेषिक, योग, वेदांत, सांख्य और मीमांसा। उस समय बीजगणित, ज्यामिति और व्याकरण को भी ज्यादा महत्व दिया जाता था। उस समय व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनि मशहूर थे। बौद्ध प्रणाली के पाठ्यक्रम में पिटक, अभिधम्म और सूत्र शामिल थे। इसके अलावा चिकित्सा और वेदों को भी महत्व दिया जाता था। हिंदू शिक्षा बौद्ध शिक्षा का ही एक हिस्सा थी, हालांकि बौद्ध शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया जाता था। उस समय दोनों प्रणालियाँ साथ–साथ चल रही थीं। शिक्षा पूरी तरह से मौखिक और बहस के जरिए दी जाती थी, और हर साल परीक्षाएँ होती थीं। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली युद्ध–कला, सैन्य–विज्ञान, राजनीति और धर्म जैसे विषयों पर केंद्रित थी।

प्राचीन भारत में सीखने के तरीके, उस समय शिक्षक अपने छात्रों पर खास ध्यान देते थे और उन्हें उनके ज्ञान और कौशल के स्तर के अनुसार पढ़ाते थे। पढ़ाई मुख्य रूप से मौखिक और बहस के जरिए होती थी, और इसके अलग–अलग तरीके इस प्रकार थे।

- उस समय किताबें नहीं थीं, इसलिए छात्रों को कक्षा में पढ़ाई गई सभी बातों को सीखने और याद रखने की आदत थी, और शिक्षक भी उन्हें याद करने में मदद करते थे।
- छात्र अपने शिक्षकों द्वारा पढ़ाई गई अवधारणाओं (कॉन्सेप्ट्स) को गहराई से समझते थे और उन्हें सीखने के नए तरीके खोजते थे।
- सुनने, मनन करने और एकाग्र होकर चिंतन करने जैसे नए तरीकों से सीखने की प्रक्रिया को समझा जाता था।
- शिक्षक छात्रों को पढ़ाने के लिए कहानी सुनाने के तरीकों का इस्तेमाल करते थे।
- छात्र शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विषयों पर सवाल पूछते थे इन विषयों पर चर्चा होती थी और फिर छात्रों को जवाब दिए जाते थे।
- उस समय की शिक्षा मुख्य रूप से कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषयों के व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित थी।
- छात्रों को समय–समय पर आयोजित सेमिनार और बहस के जरिए काफी ज्ञान मिलता था।

प्राचीन भारत में शिक्षण संस्थानों के लाभ

- यह प्रणाली छात्रों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित थी।
- सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक जोर दिया जाता था।

- छात्र केवल रैंक लाने में शामिल नहीं थे, बल्कि उनका मुख्य ध्यान ज्ञान पर था।
- कक्षाएँ जंगलों में बनाई जाती थीं, जो छात्रों को पढ़ाई के लिए सुखद वातावरण प्रदान करती थीं।
- गुरुकुलों में दी जाने वाली शिक्षा केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं थी। मैत्रेयी, विश्वंभरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा जैसी महिलाएँ प्रसिद्ध वैदिक विद्वान बनीं।
- छात्रों पर पढ़ाई से संबंधित कोई दबाव नहीं डाला जाता था ताकि वे प्रभावी ढंग से सीख सकें।
- सरकार पाठ्यक्रम बनाने में हस्तक्षेप नहीं करती थी उस समय राजा शिक्षा के विकास में मदद करते थे। प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक मूल्यों का निर्धारण करने वालो के साथ ज्ञानोत्पार्जन पर आधारित थी।

निष्कर्ष, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल शिक्षकों का निवास स्थान होता था, जहाँ छात्र अपनी दीक्षा संस्कार पूरी करने के बाद आते थे और अपनी पढ़ाई पूरी होने तक सीखते थे। परिषद या अकादमियाँ उच्च शिक्षा और ज्ञान के केंद्र थे, जहाँ छात्र चर्चा और बहस के माध्यम से सीखते थे। गोष्ठी या सम्मेलन वे स्थान थे जहाँ राज्यों के राजा हर संस्थान के विद्वानों को मिलने और अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते थे। आश्रम या मठ सीखने के अन्य केंद्र थे जहाँ देश के विभिन्न हिस्सों से छात्र आते थे और संतों और ऋषियों से सीखते थे। विद्यापीठ आध्यात्मिक शिक्षा का केंद्र था, जिसकी स्थापना महान आचार्य श्री शंकर ने श्रृंगेरी, कांची, द्वारका और पुरी जैसी जगहों पर की थी। अग्रहार ब्राह्मणों के संस्थान थे जो गाँवों में होते थे और वे वहाँ पढ़ाते थे। विहार बौद्धों द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान थे, जहाँ छात्रों को बौद्ध धर्म और दर्शन से संबंधित विषय पढ़ाए जाते थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डी. जी. आप्टे, यूनिवर्सिटीज इन एंशिएंट इंडिया (प्राचीन भारत में विश्वविद्यालय), शिक्षा और मनोविज्ञान संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।
2. भारत में प्राचीन विश्वविद्यालय https://www-aicte&india-org/downloads/ancient-pdf

3. अल्तेकर, ए.एस., एजुकेशन इन एंशिएंट इंडिया (प्राचीन भारत में शिक्षा), (5वां संस्करण), 1957, वाराणसीरू नंद किशोर एंड ब्रदर्स।

4. मुखर्जी, आर.के., हिंदू सिविलाइजेशन (हिंदू सभ्यता), लॉन्गमैन, ग्रीन एंड कंपनी, लंदन, 1936

5 महाजन, वी. डी., एंशिएंट इंडिया (प्राचीन भारत)

6 मोटवानी केवल, इंडिया ए सिंथेसिस ऑफ कल्चर्स (भारत संस्कृतियों का संगम)

7. रावत, पी.एल. History of Indian Education, आगरा राम प्रसाद एंड संस, 1996,

8. रजा, एम. (संपादक), Higher Education in India: Retrospect and Prospect, 1991, नई दिल्ली एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज।